दिल की गहराई से किया है ये एहसास
कितनी पुरानी है यह विकारों की प्यास
नस नस में भरी हुई है ये कैसी बीमारी
जिसके जाल में फंस गई है दुनिया सारी
बनते है विकार ही हर दु:ख का कारण
सूझा नहीं हमें इसका कोई निवारण
दुखी होकर सब रोते बिलखते जाते हैं
विकारों से कोई भी मुक्ति नहीं पाते हैं
देहभान का सर्प सबको डसता जाता है
विकारी जहर नस नस में बसता जाता है
चाहते हुए भी विकार छोड़ नहीं पाते हैं
जन्म जन्म इस दलदल में धँसते जाते हैं
कौन आकर हमें इस दलदल से निकाले
हाथ पकड़कर हमें फिर गिरने से बचा ले
इक बाबा है इस बिगड़ी को बनाने वाला
हमें इन विकारों में गिरने से बचाने वाला
देही अभिमानी बनना हमको सिखाता है
विकार हरकर निर्विकारी हमें बनाता है
ॐ शांति